# अथ तृतीयोऽध्याय:

## तीसरा करम-योग अद्ध्याय

(अद्ध्यायमङ्गलम्)

मार्च मास, तारीख बाह्रमीँ, वार सनीचर बरस ईसवी।
दो हजार पै सोळ्हा कै दिन, सात बजै पै पिचपन मिनटै।। १
आज सबेरै सरू करूँ मैँ, अद्ध्याय तीसरै की ब्याक्ख्या।
करमयोग का बर्णन इस मैँ, कर्या किसन नै अर्जन तैँ सै।। २
ज्ञानमार्ग सै मुस्कल सब तैँ, भाणै पाँ चालणा छुरै पै।
इस तैँ आसाँ करमयोग सै, काम कराँ हम कोए, म्हारै।। ३
बस मैँ सै यो, पर जिस खात्तर, करम कराँ वा इच्छा पूरी।
होणा कोनी म्हारै बस मैँ, इच्छा जै पूरी, लोभ बढ़ै।। ४
नाँ जै पूरी, गुस्सा ऊट्ठै, राग द्वेस बी बढदे जाँदे।
माणस पड़ कैँ मोह सोग मैँ, बँधदा जा सै, बँधदा जा सै।। ५
इस कारण करम करो सब पर, फळ नाँ चाहो, बँधणा किस तैँ?
पूरी जीवनसक्ति लगाओ, निस्काम भाव तैँ कर्माँ मैँ।। ६
करदे करदे करम सदा ए, जीवन जीयो पूरी आयु।
करम करै सो साल्लाँ ताँहीँ, उपनिसदाँ मैँ या बात कही।। ७
इस मैँ चित्त लगाणा होवै, करमयोग का सीद्धा रस्ता।
कर कैँ करम मिलैँ जो फळ तो, भोग्गो उन नै त्याग भाव तैँ।। ८
फळ दाता परभू नै अर्पित, परसाद समझ कैँ वो परभू का।
माणस जो खुस सै रहँदा वो, आसा कुण्ठा ओर निरासा।। ९
उस कै मन नै छून्दे बी नाँ, न्यूँ आप्णे कर्म करणियै की।
बुद्धी उजळी निर्मळ हो कैँ, समता मैँ निस्चित टिक ज्या सै।। १०
मूल प्रक्रिति कै निकट प्होँच वो, पुरुस परात् पर मैँ मिल ज्या सै।
भोत कही, भरमाया मन्नै, आओ चाल्लाँ सञ्जै धौरै।। ११

जित वो कुरुआँ कै राज्जा नै, गीत्ता का ग्यान सुणावै सै।।
अर्जन जो हाम् बण नाँ पावाँ, ध्रितरास्टर बी बणाँ कदे नाँ।। १२
सज्जै तो कम तैं कम बण ज्याँ, ग्यान कठै ध्रितरास्टर-स्याँ नै?।
या ए म्हारी सिद्धी मोट्टी, ईस क्रिपा तैं पावाँ इस नै।। १३

**अर्जुन उवाच**

**ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते, मता बुद्धिर्जनार्दन।**
**तत्किं कर्मणि घोरे मां, नियोजयसि केशव।। १**

अर्जन बोल्या

(ग्यान करम मैं तैं एक बता)

बेहतर जै करम तैं तन्नै, ग्यान मधुसूदन, लाग ह्या सै।
तो क्यूँ इस लड़नै-भिड़नै-से, घोर करम मैं मन्नै पेल्लै?।। १

**व्यामिश्रेणेव वाक्येन, बुद्धिं मोहयसीव मे।**
**तदेकं वद निश्चित्य, येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।। २**

रळी-मिली-सी, साफ नहीं जो, उन बात्ताँ तैं बुद्धी मेरी।
भरमावै सै, एक बता वा, निस्चै कर कैं जिस तैं मेरा।
भोत भला हो इत बी, उत बी।। २

**श्रीभगवानुवाच**

**लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा, पुरा प्रोक्ता मयानघ।**
**ज्ञानयोगेन सांख्यानां, कर्मयोगेन योगिनाम्।। ३**

स्रीभगुवान बोल्ले
(करमयोग फेर कह्या किसन नै)

इस दुनियाँ मैं दो तह्यियाँ की, समझ बताई पहल्याँ मन्नै।
ग्यानयोग तैं ग्यान्नी जन की, करमयोग तैं योग्गी जन की।। ३

**न कर्मणामनारम्भान्, नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।**
**न च संन्यसनादेव, सिद्धिं समधिगच्छति।। ४**



नाँ करम नहीं करणैं तैं सै, करम बिना सै होन्दा माणस।
अर नाँ ए सन्न्यासै तैं सै, सिद्धी कद्दे पान्दा माणस।। ४

**न हि कश्चित्क्षणमपि, जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।**
**कार्यते ह्यवशः कर्म, सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।। ५**

नाँ कोए छणमात्तर नै बी, बैठ सकै सै करम कर्याँ बिन।
कर्म करावैं कर कैं बेबस, सब नै प्रक्रिती के गुण तीन्नूँ।। ५

**कर्मेन्द्रियाणि संयम्य, य आस्ते मनसा स्मरन्।**
**इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा, मिथ्याचारः स उच्यते।। ६**

हाथ, पाँव नै, जबाँ, गुदा नै, जननेन्द्रिय नै बस मैं कर कैं।
जो बैट्ठै सै मन तैं सुमरण, करदा उन के बिसयाँ का पर।।
मोह पड़ी सै उस की बुद्धी, झूठ-मूठ का सद् आचारी।
वो कुहावै इस दुनिया मैं, सिरफ दिखावै खात्तर माणस।। ६

**यस्त्विन्द्रियाणि मनसा, नियम्यारभतेऽर्जुन।**
**कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।। ७**

जो पर अपणी इन्द्री मन-सँग, बस मैं कर कैं करम करै सै।
काम लेन्दा इन्द्रियाँ तैं, करम-योग पै चाल्लै सै जो।।
राग द्वेस नै छोड फळाँ की, इच्छा नाँ करदा वो माणस।
उस ढोङ्गी तैं आच्छा हो सै, नहीं फँस्या वो खास बणै सै।। ७

**नियतं कुरु कर्म त्वं, कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।**
**शरीरयात्रापि च ते, न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।। ८**

सामाजिक स्थिति, वरण धरम नै, आश्रम स्थिति उमर धरम लख अर।
सास्त्राँ मैं निस्चित करमाँ नै कर, नहीं करण तैं करणाँ आच्छा।
काया बी तेरी नाँ चाल्लै, करम बिना तो अर्जन, कद्दे।। ८

**यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र, लोकोऽयं कर्मबन्धनः।**
**तदर्थं कर्म कौन्तेय, मुक्तसङ्गः समाचर।। ९**

यग की खात्तर कर्यै करम तैं, ओर करम जो हो सै, उस तैं।

दुनियाँ या बन्धन मैँ पड़दी, यग की खात्तर कुन्ती के सुत।
छोड राग नै करम सदा कर।। ९

**सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा, पुरोवाच प्रजापतिः।**
**अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।। १०**

साथ यग्य कै परजा रच कैँ, पिछलै बखतैँ बोल्ह्या विधना।
इस तैँ सृस्टी करो आपणी, यो अर थाह्ना हो इच्छापूरक।। १०

**देवान्भावयतानेन, ते देवा भावयन्तु वः।**
**परस्परं भावयन्तः, श्रेयः परमवाप्स्यथ।। ११**

देवाँ नै खुस राक्खो इस तैँ, वैँ देव रखैँ राज्जी तम नैँ।
एक दूसरै नै राज्जी कर, कल्याण भोत तम पाओगे।। ११

**इष्टान्भोगान्हि वो देवा, दास्यन्ते यज्ञभाविताः।**
**तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो, यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।। १२**

मनचाहे भोग्गाँ नैँ तम नै, देव देँगे यग्य तैँ खुस हो।
वैँ जो देवैँ, नाँ दे उन नै, जो भोग्गै, चौरै वो हो सै।। १२

**यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो, मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।**
**भुञ्जते ते त्वघं पापा, ये पचन्त्यात्मकारणात्।। १३**

यग तैँ बचदा भोग्गण आळे, होन्दे छुटदे सब पाप्पाँ तैँ।
भोग्गैँ वैँ तो पाप्पै पाप्पी, जो रान्धैँ सैँ आप्णी खात्तर।। १३

**अन्नाद्भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसंभवः।**
**यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्भवः।। १४**

नाज्जाँ तैँ होँ प्राणी सारे, बाद्दल तैँ सै नाज निपजदा।
यग्य कर्‌यैँ तैँ बाद्दल होवै, यग्य बणै सै करम कर्‌यै तैँ।। १४

**कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि, ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।**
**तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म, नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। १५**

करम बेद तैँ, त्रिगुण ग्यान तैँ, प्रगट जाण ले, बेद प्रगट सै।
अक्सर अविनासी परम ब्रह्म तैँ, इस तैँ सब मैँ व्याप रह्या वो।



ब्रह्म नित्य सै यग मैँ स्थापित।। १५

**एवं प्रवर्तितं चक्रं, नानुवर्तयतीह यः।**
**अघायुरिन्द्रियारामो, मोघं पार्थ स जीवति।। १६**

न्यूँ घूम्यै यग कै चक्कर नै, नहीँ घुमावै सै जो माणस।
पाप करै सै सारी आयू, इन्द्रीबिसयाँ मैँ ए रमड़्या।
व्यर्थ साँस वो अर्जन ले सै।। १६

**यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।**
**आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।। १७**

(आतमरति की परसंसा)

जो तो आप्णै मैँ ए रमदा, आप्पै तैँ ए धाप्प्या माणस।
आप्पौ मैँ ए सन्तोष करै, उस नै करणा किम्मे नाँ सै।। १७

**नैव तस्य कृतेनार्थो, नाकृतेनेह कश्चन।**
**न चास्य सर्वभूतेषु, कश्चिदर्थव्यपाश्रयः।। १८**

नाँ उस नै करणै तैँ ळेणा, नाँ नाँ करणै तैँ इत किम्मे।
नाँ उस नै सब भूत्ताँ मैँ सै, कोए मतबल तैँ अर मतबल।। १८

**तस्मादसक्तः सततं, कार्यं कर्म समाचर।**
**असक्तो ह्याचरन्कर्म, परमाप्नोति पूरुषः।। १९**

(करमयोग की परसंसा)

इस कारण फळ या ओर कितै, राग भाव नै छोड जमाँ तैँ।
बिना रुके कर्तब कर आप्णा, राग छोड कैँ करम करणियाँ।
परम ततव नै पावै माणस।। १९

**कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।**
**लोकसंग्रहमेवापि, संपश्यन्कर्तुमर्हसि।। २०**

कर्तब कर ए परम सफळता, पाई थी रै जनक-जिस्याँ नै।
लोग्गाँ नै न्यूँ राह दिखा कैँ, जोड़न नै बी समझ करम सै।
करणा ठीक तनै रै अर्जन।। २०

**यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।**
**स यत्प्रमाणं कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते।। २१**

(आच्छै पाच्छै दुनियाँ चाल्लै)

जो-जो करदा आच्छा माणस, वो-वो करदा आम आदमी।
वो जो करदा, प्रमाण बणै वो, दुनियाँ उस कै पाच्छै चाल्लै।। २१

**न मे पार्थास्ति कर्तव्यं, त्रिषु लोकेषु किंचन।**
**नानवाप्तमवाप्तव्यं, वर्त एव च कर्मणि।। २२**

(लाग्ग्या करमाँ मैँ मैँ रहँदा)

नाँ सै मन्नै करणा बाक्की, तीन लोक मैँ किम्मे अर्जन।
नाँ नाँ-पाया पाणा जो था, लग्या रहूँ सूँ सदा करम मैँ।। २२

**यदि ह्यहं न वर्तेयं, जातु कर्मण्यतन्द्रितः।**
**मम वर्त्मानुवर्तन्ते, मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। २३**

जै मैँ अर्जन, लग्या रहूँ नाँ, सदा करम मैँ तज कैँ ग़फ़लत।
मेरै रस्तै चाल्लैँ माणस, पिरथा के सुत, सभी तह्नाँ सैँ।। २३

**उत्सीदेयुरिमे लोका, न कुर्यां कर्म चेदहम्।**
**संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।। २४**

उल्टी-पुल्टी दुनियाँ हो ज्या, नाँ करूँ करम जै मैँ अर्जन।
घोळ-मथोळ करणियाँ बण ज्याँ, कर द्यूँ खतम प्रजा ये सारी।। २४

**सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो, यथा कुर्वन्ति भारत।**
**कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।। २५**

(ग्यान्नी अग्ग्यान्नी बण करम करै)

फँसे करम मैँ राग द्वेस तैँ, अग्ग्यानी ज्यूँ करम करैँ सैँ।
करणा चहिये ग्यान्नी नै न्यूँ, राग छोड कैँ करणा चाहँदे।
लोग्गाँ नै उत जोड़न खात्तर।। २५

**न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।**
**जोषयेत्सर्वकर्माणि, विद्वान्युक्तः समाचरन्।। २६**



(करम मार्ग तैँ ना भटकावै)

फळ की खात्तर करम करणिये, कर्माँ मैँ जो धँसे-फँसे सैँ।
उन नासमझाँ की बुद्धी मैँ, भेद कदे नाँ करणा चहिये।।
प्रेमभाव तैँ करवावै खुद, ततव समझदा करमयोग मैँ।
जुड़्या करम सब करदा ग्यान्नी।। २६

**प्रकृतेः क्रियमाणानि, गुणैः कर्माणि सर्वशः।**
**अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।। २७**

सत्त्व, रजस्, तम् तीन करैँ सैँ, प्रक्रिती के गुण ये करम सभी।
'मैँ', 'मैँ' करदा मूर्ख बण्या यो, 'मैँ कर्म करूँ सूँ', न्यूँ मान्नै।। २७

**तत्त्ववित्तु महाबाहो, गुणकर्मविभागयोः।**
**गुणा गुणेषु वर्तन्त, इति मत्वा न सज्जते।। २८**

समरथ बाँहाँ आळे अर्जन, बड़े-बड़े रै करम करणिये।
गुण सैँ कारण, करम बिसै सैँ, गुण कर्माँ के इन भेद्दाँ का।।
तन्त समझदा माणस किन्तू, 'गुणै गुणाँ मैँ क्रिया करैँ सैँ'।
न्यूँ मान नहीँ कद्दे फँसदा।। २८

**प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः, सज्जन्ते गुणकर्मसु।**
**तानकृत्स्नविदो मन्दान्, कृत्स्नविन्न विचालयेत्।। २९**

प्रक्रिती के इन तीन गुणाँ की, जद मैँ आए अर भरमाए।
फँस ज्याँ सैँ गुण तैँ करवाए, कर्माँ मैँ वैँ आसक्ती रख।
पूरण नै नाँ जाणन आळे, फळ अर भोग्गाँ नै जाणनिये।
मन्दमती उन नै, पूरण नै, जाणै जो, वो नाँ बिचळावै।। २९

**मयि सर्वाणि कर्माणि, संन्यस्याध्यात्मचेतसा।**
**निराशीर्निर्ममो भूत्वा, युध्यस्व विगतज्वरः।। ३०**

(ईस्स्वर पै तज करमाँ नै लड़)

मेरै ऊप्पर सब कर्माँ नै, तज कैँ आतमग्यानी मन तैँ।
इच्छा ममता तैँ तैँ हट कैँ, लड़ ज्या तैँ तज सन्तापाँ नै।। ३०

**ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।**
**श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो, मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।। ३१**

(यो मान्नण नाँ मान्नण का फळ)

जो मेरा मत यो मान सदा, आप्णे काम करैं सैं माणस।
सरधा आळे जो नाँ देक्खैं, भलै काम मैं कदे बुराई।
छुट्टैं वैं बी सब कर्मा ँ तै।। ३१

**ये त्वेतदभ्यसूयन्तो, नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।**
**सर्वज्ञानविमूढांस्तान् , विद्धि नष्टानचेतसः।। ३२**

जो तो इस मैं दोस काढदे, नाँ सैं चाल्लैं मेरे मत पै।
पा सब ज्ञान, फेर बी मूरख, जाण खतम उन अग्ग्यानी नै। ३२

**सदृशं चेष्टते स्वस्याः, प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।**
**प्रकृतिं यान्ति भूतानि, निग्रहः किं करिष्यति।। ३३**

ज्ञानवान बी चेस्टा करदा, आप्णै गुण सुभाव कै जोग्गी।
सुभाव पै सब जा कैं टिकदे, टोक्का-टाक्की, रोक-थाम बी।
कोण किसै का के कर ले गी?।। ३३

**इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे, रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।**
**तयोर्न वशमागच्छेत्, तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।। ३४**

(राग द्वेस कै बस नाँ आवै)

इन्द्री इन्द्री कै बिसयाँ मैं, राग दुवेस जरूर बणैं सैं।
जिद वो लाग्गै आच्छा मन नै, रागभावना उस मैं हो ज्या।।
जिद वो नाँ भावै मन नै तद, वो ऐ भूण्डा लाग्गै मन नै।
उन कै बस नाँ आणा चहिये, दो वैं सैं माणस के दुस्मन।। ३४

**श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः, परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।**
**स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।। ३५**

(आपणा कर्तब सब तैं आच्छा)

आच्छी हो सै आप्णी करणी, गुण तैं होवै होणी बी जो।



आच्छी तद्दियाँ करी पराई, करणी तैं वो हो सै आच्छी।
निज करणी मैं मरणा आच्छा, करम पराया डर ल्यावै सै।। ३५

**अर्जुन उवाच**

**अथ केन प्रयुक्तोऽयं, पापं चरति पूरुषः।**
**अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय, बलादिव नियोजितः।। ३६**

अर्जन बोल्ल्या

(पाप करण मैं कोण गेरदा)

ईब भला हो किस तैं प्रेरित, यो पाप करै माणस किरसण?
नाँ वो चाव्है फिर बी अर्जन, मान्नौं जबरन, हो वो जोत्त्या।। ३६

**श्रीभगवानुवाच**

**काम एष क्रोध एष, रजोगुणसमुद्भवः।**
**महाशनो महापाप्मा, विद्ध्येनमिह वैरिणम्।। ३७**

स्रीभगुवान बोल्ले

(इच्छा गुस्सा पाप कराँवैं)

इच्छा सै यो, गुस्सा सै यो, राजस गुण तैं हो सै पैदा।
भोत भूखड़ा तगड़ा पाप्पी, जाण समझ तैं इस नै बैरी।। ३७

**धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।**
**यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।। ३८**

धूम्मैं तैं ज्यूँ ढँकी आग ज्या, सीस्सा ढँक ज्या धूळ मैल तैं।
लिपट्या हो ज्यूँ गरभ जेर तैं, त्यूँ इस तैं यो ग्यान ढँक्या ज्या।। ३८

**आवृतं ज्ञानमेतेन, ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।**
**कामरूपेण कौन्तेय, दुष्पूरेणानलेन च।। ३९**

ढँक्या ग्यान सै इस इच्छा नै, पूरी हो या नाँ हो पूरी।
ग्यान्नी की सै नित की बैरी, धाप कदे नाँ इस की होन्दी।
इच्छारूपी आग बड़ी सै, कुन्ती के सुत अर्जन, धर ले।। ३९

**इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।**
**एतैर्विमोहयत्येष, ज्ञानमावृत्य देहिनम्।। ४०**

(चाहत गुस्सा कित सै रहँदे)

करम ग्यान की दसियाँ इन्द्री, मन अर बुद्धी इस इच्छा का।
बास महल सब कहलावैं सैं, मोहै या इच्छा माणस नै।
ग्यान ल्हको कैं इन कै द्वारा।। ४०

**तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ, नियम्य भरतर्षभ।**
**पाप्मानं प्रजहि ह्येनं, ज्ञानविज्ञाननाशनम्।। ४१**

(इन नै तैं मार गेर दे)

इस कारण तैं इन्द्री आप्णी, सब तैं पहल्याँ बस मैं कर कैं।
भरताँ मैं रै उत्तम अर्जन, उस इस पाप्पण नैं मार गिरा।
ग्यान'र अनुभव खतम करै जो।। ४१

**इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।**
**मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।।४२**

स्थूल देह मैं सूक्षम इन्द्री, इन्दर के ये काम करैं सैं।
करम ग्यान की दो तह्नियाँ की, ग्यानेन्द्री सैं उन मैं सूक्षम।।
दसौं इन्द्रियाँ तैं मन ऊप्पर, मन तैं ऊप्पर बुद्धी सूक्षम।
जो बुद्धी तैं ऊप्पर सूक्षम, वो तो वो ए आत्मा हो सै।। ४२

**एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा, संस्तभ्यात्मानमात्मना।**
**जहि शत्रुं महाबाहो, कामरूपं दुरासदम्।। ४३**

**ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोध्यायः।। ३।।**

न्यूँ बुद्धी तैं जाण सूक्स्म नै, थाँभ स्वयं नै आप्पैं तैं तैं।
जिस नै बस मैं करणा मुस्कल, इच्छारूपी उस दुस्मन नै।
मार, बड़ी-सी बाज्जू आळे, बिक्रमकारज भोत करणिये।। ४३

**स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टे सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्स्य मैं तीसरा अध्याय पूरा होया।। ३।।**

पूर्वसलोकयोग ११९ + ४३ = १६२